

(षष्ठस्कन्धार्थ पोषणलीला)

षष्ठस्कन्धमें पुष्टिलीला या भगवदनुग्रहरूपा पोषणलीला प्रमुखतया वर्णनीय है. काल कर्म स्वभाव आदिकी नियतिके वश अपरिहार्यतया होनेवाले प्रभावोंको निरस्त करके, उन प्रभावोंसे जीवात्माको बचा लेनेकी लीलाको 'पोषण' कहा जाता है. इसीका दूसरा नाम 'अनुग्रह' भी है. यह भगवान्का अक्षित्य धर्मरूप विशेष सामर्थ्य है.

(प्रकरणार्थ)

इस लीलाके अन्तर्गत नाम ध्यान तथा अर्चन के प्रभेदवश तीन प्रमुख प्रकरण योजित हुवे हैं. ये नाम ध्यान या अर्चन भगवान्के अनुग्रह अथवा भगवान्द्वारा पोषण किये जानेके संकल्पोंके अनुरूप जीवात्माओंके भीतर प्रकट होनेवाले अवान्तरव्यापार हैं, अर्थात् भगवान् ही इन्हें जीवोंके उद्धारके बहानेकी तरह प्रकट करते हैं.

(अध्यायार्थ)

इस प्रथम प्रकरणमें भगवन्नामोंके श्रवण कीर्तन तथा स्मरण रूपी अवान्तरव्यापारोंका निरूपण करनेवाले तीन अध्याय योजित हुवे हैं.

(पोषणलीलाके अन्तर्गत १-३ अध्यायोंवाला प्रथम नामप्रकरण)

(^१)पोषणलीलाके अवान्तरव्यापाररूप भगवन्नामोंके प्रकरणमें अपने पुत्रका जो 'नारायण' नाम रखा था, उस अर्थमें नामके उच्चारणकी महिमाके वश अजामिलने यमदूतोंके मुखसे वृत्तान्त जो सुना, वह इस अध्यायमें निरूपित हुवा है.

(^२)पोषणलीलाके अवान्तरव्यापाररूप भगवन्नामोंके प्रकरणमें विष्णुदूतोंके मुखसे भगवन्नामकीर्तनकी प्रशंसा और उसके कारण मिलते फलका निरूपण इस द्वितीय अध्यायमें किया गया है.

(^३)पोषणलीलाके अवान्तरव्यापाररूप भगवन्नामोंके प्रकरणमें यमराजके मुखसे भगवन्नामका स्मरण करनेवालोंके बारेमें सिद्धान्तका निरूपण इस तृतीय अध्यायमें किया गया है.

(पोषणलीलाके अन्तर्गत भगवद्रूपके ध्यानका निरूपण करनेवाले ४-१७ अध्यायोंवाला द्वितीय प्रकरण)

इसके बाद भगवद्ध्यानमें भगवद्रूपके ध्यानकी महत्ता होनेके कारण तथा रूपकी महत्ताके निरूपणार्थ चौदह अध्याय योजित किये गये हैं :

(४)पोषणलीलाके अवान्तरव्यापाररूप भगवद्ध्यानके प्रकरणमें दक्षपर केवल भौतिक सात्त्विक प्रसाद प्रकट हुवा उसका निरूपण इस चतुर्थ अध्यायमें किया गया है.

(५)पोषणलीलाके अवान्तरव्यापाररूप भगवद्ध्यानके प्रकरणमें दक्षपुत्रोंपर ज्ञानके कारण तमोगुणसे मिश्रित सात्त्विक प्रसाद प्रकट हुवा उसकी कथा इस पांचवें अध्यायमें निरूपित हुयी है.

(६)पोषणलीलाके अवान्तरव्यापाररूप भगवद्ध्यानके प्रकरणमें दक्षकी कन्याओंके उपर जगत्के धारणार्थ रजोगुणसे

मिश्रित सात्त्विक भौतिक प्रसाद जो प्रकट हुवा, उसकी कथा छठे अध्यायमें निरूपित हुयी है.

(७) पोषणलीलाके अवान्तरव्यापाररूप भगवद्‌ध्यानके प्रकरणमें प्रसाद प्रकट करनेको काश्यप त्वष्टाके पुत्र विश्वरूपद्वारा इन्द्रका पौरोहित्य और उसपर भी देवताओंके गुरु बृहस्पतिके समान ज्ञान तपस्या रूपी आध्यात्मिक प्रसादका निरूपण सातवें अध्यायमें निरूपित हुवा है.

(८) पोषणलीलाके अवान्तरव्यापाररूप भगवद्‌ध्यानके प्रकरणमें इन्द्रपर प्रसाद प्रकट करनेको नारायणकवचका उपदेश तथा विश्वरूपके भीतर वैष्णवताके प्रकट होनेके प्रसादकी कथा आठवें अध्यायमें निरूपित हुयी है.

(९) पोषणलीलाके अवान्तरव्यापाररूप भगवद्‌ध्यानके प्रकरणमें इन्द्रपर प्रसाद प्रकट करनेको कर्मनिष्ठ विश्वरूपके द्वारा अन्यथा रीतिसे यज्ञका अनुष्ठान करवानेकी कथा, इसके कारण विश्वरूपकी दैत्यभावापत्ति हो जानेसे भी इन्द्रपर भी प्रकट होनेवाले प्रसादमें प्रतिबन्ध उठ खड़े होनेकी कथा तथा विश्वरूपके वधकी कथा कही गयी है. त्वष्टाके पुत्र वृत्रके भक्त होनेपर भी देवद्रोहके अपराधवश उसके दैत्यभावापत्तिकी कथा; और इन्द्रके उपर होनेवाले प्रसादमें उसकी प्रतिबन्धकताके कारण उसके वधकी कथा; तथा, दधीचि ऋषिके दैत्य न होनेपर भी उनका जीवन भी इन्द्रपर किये जानेवाले प्रसादमें प्रतिबन्ध होनेकी भी कथा इस नौवें अध्यायमें कही गयी हैं. इसके अलावा इन्द्रपर किये जानेवाले प्रसादमें प्रतिबन्धक होनेके रूपमें इन्द्रद्वारा कर्म ज्ञानी और भक्त के वधकी कथा कही गयी है.

(१०) पोषणलीलाके अवान्तरव्यापाररूप भगवद्‌ध्यानके प्रकरणमें वृत्रासुरपर आधिदैविक प्रसादरूप ज्ञानका निरूपण दसवें अध्यायमें किया गया है. विषादके कारण सेनाद्वारा पलायन किये जानेपर भी वृत्रासुर स्वयं विषादग्रस्त नहीं हुवा और सैनिकोंको जो उसने उपदेश दिया उससे पता चलता है कि वृत्रासुरके ज्ञानमें किसी तरहकी रुकावट या प्रतिरोध नहीं था. यही दिखलाना इस दसवें अध्यायमें अभिप्रेत है.

(११) पोषणलीलाके अवान्तरव्यापाररूप भगवद्‌ध्यानके प्रकरणमें वृत्रासुरके ऊपर आधिदैविक प्रसादरूपा जो भक्ति प्रकट हुयी उसका निरूपण ग्यारहवें अध्यायमें किया गया है. वृत्रके पराक्रमको देख कर विषादग्रस्त हो जानेवाले इन्द्रको अपने मारनेका उपाय समझानेवाले वृत्रासुरमें भगवान्‌के अलावा अन्य किसी भी अनुराग नहीं है क्योंकि अतीव दैन्यके साथ की भगवत्स्तुतिमें भी वृत्रासुरके भीतर भगवान्‌के माहात्म्यका ज्ञान और स्नेह यों भक्तिके दोनों ही अंश अक्षुण्ण दिखलायी पड़ते हैं.

(१२) पोषणलीलाके अवान्तरव्यापाररूप भगवद्‌ध्यानके प्रकरणमें वृत्रासुरपर आधिदैविक प्रसादरूप बलका निरूपण किया गया है. साथ ही साथ इन्द्रपर भी प्रासादका ज्ञापक वृत्रासुरका वध किया गया है. वज्रप्रहार करने बाद स्वयं विलज्जित होनेवाले इन्द्रको ज्ञान और नीति के उपदेशकी कथामें पुनः इन्द्रको वज्रग्रहण करवानेके बावजूद निरायुध कटी बाहुओंवाले वृत्रासुरद्वारा इन्द्रको उसके वाहनके निगल जानेकी कथा वृत्रके अलौकिक बलके निरूपणार्थ इस बारहवें अध्यायमें योजित की गयी है.

(१३) पोषणलीलाके अवान्तरव्यापाररूप भगवद्‌ध्यानके प्रकरणमें वृत्रासुरवध भी आधिदैविक होनेके कारण उसके कारण इन्द्रको जो पापाचरण करनेका क्लेश हुवा और वह ऋतम्भर भगवान्‌के ध्यानद्वारा निवृत्त हुवा, स्वयं भगवान्‌ रुद्रने इन्द्रके पापोंकी हानि सूचित की, इसी तरह लक्ष्मीजीद्वारा इन्द्ररक्षा और ध्यानमें किसी तरहका प्रतिबन्ध न रह जानेकी कथा साथ ही साथ अश्वमेध यज्ञके अनुष्ठानद्वारा इन्द्रको महेन्द्र बन पानेकी कथा इस तेरहवें अध्यायमें निरूपित हुयी है.

(१४) पोषणलीलाके अवान्तरव्यापाररूप भगवद्‌ध्यानके प्रकरणमें इन्द्रको भक्तिमार्गीय भक्तोंके लिये अनुपयोगी मतान्तरसिद्ध वैराग्यके प्रदानका निरूपण चौदहवें अध्यायमें किया गया है.

(१५) पोषणलीलाके अवान्तरव्यापाररूप भगवद्‌ध्यानके प्रकरणमें इन्द्रको भक्तिमार्गीय भक्तोंके लिये अनुपयोगी मतान्तरसिद्ध ज्ञानके प्रदानका निरूपण पंद्रहवें अध्यायमें किया गया है.

(१६) पोषणलीलाके अवान्तरव्यापाररूप भगवद्‌ध्यानके प्रकरणमें इन्द्रको भक्तिमार्गीय भक्तोंके लिये अनुपयोगी मतान्तरसिद्ध भक्तिरूप प्रसादका निरूपण सोलहवें अध्यायमें किया गया है.

(१७) पोषणलीलाके अवान्तरव्यापाररूप भगवद्ध्यानके प्रकरणमें मुख्य भक्तिमें ऐसा कोई दोष हो नहीं सकता अतः दोषको आगन्तुक होने और उसके हेतुभूत शापकी कथा जो भक्तिमार्गीय भक्तोंके बारेमें सम्भव नहीं अतः मतान्तरसिद्ध शापकथाका निरूपण सत्रहवें अध्यायमें किया गया है.

(पोषणलीलाके अन्तर्गत भगवान्के अर्चनका निरूपण करनेवाले १८-१९ अध्यायोंवाला तृतीय प्रकरण)

(१८) पोषणलीलाके अवान्तरव्यापाररूप भगवदर्चनरूपा क्रियाके प्रकरणमें बाह्य पूजाके कारण बाह्य आसुरभाव निवृत्त होता है उसकी कथा अठारहवें अध्यायमें वर्णित हुयी है.

(१९) पोषणलीलाके अवान्तरव्यापाररूप भगवदर्चनरूपा क्रियाके प्रकरणमें आन्तर पूजाके कारण आन्तर आसुरभाव निवृत्त होता है उसकी कथा उन्नीसवें अध्यायमें वर्णित हुयी है.

००००००+००००००